विदेशों को पामरोसा तेल का प्रमुख निर्यातक हो गया है। इस स्थिति में सुधार लाने के लिए आवश्यक है कि अपने प्रदेश में भी रोसा घास के रोपण को प्रोत्साहित किया जावे। इसे कुटीर उद्योग के रूप में अपनाकर कृषक न केवल पड़त अनुपजाऊ भूमि का सदुपयोग ही कर सकते हैं, वरन् इससे अतिरिक्त आय कमाकर देश के लिये मूल्यवान विदेशी मुद्रा के अर्जन में भी सहयोग कर सकते हैं।

रोसा घास का उत्पादन पड़त भूमि पर इसके बीज बोकर आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। बीज के अंकुरण के पश्चात केवल निंदाई की आवश्यकता रहती है। बीज जून/जुलाई के माह में बोये जाते हैं और अक्टूबर-नवम्बर में इसे काट कर इससे तेल प्राप्त किया जा सकता है।

तेल प्राप्त करने के लिए स्थानीय तौर पर भी कृषक अपना यंत्र बना सकते हैं जो अत्यंत सरल तथा कम खर्च का होता है। इसके लिए दो हंडिया (मिट्टी की) ली जाती हैं, जिन्हें एक के ऊपर एक रखा जाता है। ऊपर की हंडी में तले में छेद रखे जाते हैं तथा ऊपर की हड्डी का ढक्कन लेई के द्वारा बंद किया जाता है। इस ढक्कन में पोला बाँस लगाया जाता है, जिसे आगे बढ़ाकर किसी धातु के (यदि ताँबे के बर्तन का उपयोग किया जावे तो उचित होगा) बर्तन में जो पानी में डूबा हो लगा दिया जाता है। घास, तना और फूल नीचे की हंडी में पानी के साथ उबाले जाते हैं और धीरे-धीरे तेल बर्तन में एकत्रित होता जाता है। यदि यह कार्य नाले या तालाब के पास किया जाता है, तो यह कार्य अत्यंत सुविधा से किया जा सकता है। इस प्रकार कृषक इसका स्वयं तेल निकालकर विक्रय कर सकते हैं।

इस प्रकार कृषक अपनी पड़त या अनुपजाऊ भूमि में रोसा घास का उत्पादन कर न केवल अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकते हैं वरन् विदेशी मुद्रा प्राप्त करने में भी सहायक हो सकते हैं।

एस. एफ. आर. आई., प्रचार पत्रिका - 7

रोसा घास

Cymbopogon martinii

म. प्र. राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

1995

औषधि 1/1995

सुगंधित घासों की कृषि से न केवल सामान्य कृषक अपनी आय बढ़ाने में सक्षम हो सकते हैं, वरन वे विदेशी मुद्रा का अर्जन कर अपने देश की अर्थव्यवस्था के विकास में भी अपना योगदान कर सकते हैं।

सुगंधित घासों की श्रेणी में रोसा घास का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। इसका वैज्ञानिक नाम सिम्बोपोगन मार्टिनी (Cymbopogon martinii) है। यह घास हमारे देश के मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, असम और पंजाब में पाई जाती है। रोसा घास 150 से.मी. से 200 से.मी. ऊंची, मधुर सुगंध वाली घास प्रजाति है, जो सामान्यतया सूखी जलवायु वाले क्षेत्रों में होती है। यह घास दो प्रकार की होती है, जिन्हें मोतिया और सोफिया के नाम से जाना जाता है। मोतिया और सोफिया घास के पत्तों इत्यादि में कोई अंतर नहीं होता परन्तु दोनों घासों मिट्टी और जलवायु के विभिन्न क्षेत्रों में पाई जाती है। मोतिया घास सामान्यतः कम होती है। केवल अनुभवी कृषक ही अपने अनुभव के आधार पर मोतिया और सोफिसा में अंतर कर सकते हैं। मध्यप्रदेश में सोफिया रोसा घास बैतूल, निमाड़, झाबुआ, अलीराजपुर और बड़वानी में बहुतायत से पाई जाती है।

मोतिया घास के पत्तों, डंठलों एवं फूलों में सुगंधित तेल पाया जाता है। इसके पत्तों में 1.4 प्रतिशत तेल होता है। इसके फूलों में पत्तों से अधिक तेल रहता है जो नवम्बर माह तक अधिकतम रहता है और फिर क्रमशः कम होने लगता है। इसके डंठलों में 0.4 प्रतिशत तेल पाया जाता है।

इससे प्राप्त होने वाले तेल को "पामरोसा आईल" (Palmrosa oil) के नाम से जाना जाता है। तेल प्राप्त करने के लिए घास डंठल तथा फूलों को सितम्बर-अक्टूबर माह में जमीन की सतह से ऊपर काटा जाता है एवं पत्ते, डंठल तथा फलों का आसवन कर तेल प्राप्त किया जाता है। काटी गई घास का तुरंत आसवन करना आवश्यक होता है क्योंकि यदि घास काटकर कुछ समय रखी जावे तो इससे प्राप्त होने वाले तेल की गुणवत्ता तथा मात्रा में कमी हो जाती है। सामान्यतः एक एकड़ क्षेत्र से 7 से 9 किलो पामरोसा तेल प्राप्त होता है।

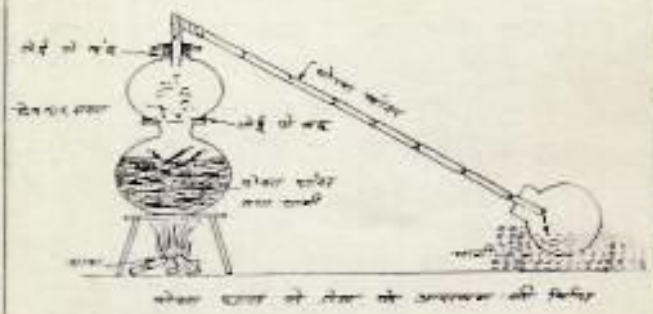

पामरोसा या मोतिया तेल का मुख्य उपयोग इत्र उद्योग में किया जाता है। इसको गुलाब के इत्र में मिलाया जाता है। गुलाब की पंखड़ियों पर इत्र निकालने के पहले पामरोसा तेल छिड़का जाता है। इससे अधिक इत्र की मात्रा प्राप्त होती है। विदेशों में पामरोसा तेल को आधार बनाकर कई सुगंधित पदार्थ बनाये जाते हैं जो सौंदर्य प्रसाधन के रूप में उपयोग किये जाते हैं। इसे चंदन के तेल में मिलाकर शरीर पर लगाने से मच्छर दूर रहते हैं। औषधि के रूप में कम मात्रा में लेने पर यह पेट के कई विकारों को ठीक करने में सहायक हो सकती है।

कुछ वर्षों पहले पूरे विश्व में पामरोसा तेल के उत्पादन पर भारतवर्ष का एकाधिकार था। 40 वर्षों पूर्व जावा में रोसा घास (मोतिया) के बीज ले जाकर इनका रोपण किया गया और वर्तमान स्थिति में जावा